हर किसी से नम्रता से बात करें। मीठा बोलने वाला कभी नहीं हारता।
– अज्ञात

भारत में स्टार्टअप कल्चर

एक बार फिर इस क्षेत्र में सुगबुगाहट आई है। पारंपरिक उद्यमियों ने संघर्ष के दिनों को झेलने के लिए कई व्यवस्थाएं बना रखी हैं पर नए उद्यमी अक्सर छोटी चुनौतियों का सामना होते ही लड़खड़ाने लगते हैं।

अमर जोशी।

अनेक समस्याओं से जूझते हुए देश के नए उद्यमियों (स्टार्टअप्स) ने न सिर्फ भारतीय अर्थव्यवस्था में बल्कि विश्व स्तर पर अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है। पिछले दिनों भारतीय रिजर्व बैंक ने एक सर्वेक्षण के जरिये उनकी विशेषताओं और चुनौतियों को रेखांकित किया। इस सर्वे के मुताबिक भारत में स्टार्टअप कल्चर अभी कुछ ही राज्यों में जोर पकड़ सका है। नवंबर 2018 से अप्रैल 2019 के दौरान 1246 प्रतिभागियों के बीच किए गए सर्वे में तीन चौथाई प्रतिभागी महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना और दिल्ली से थे। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार इनमें 50 प्रतिशत इकाइयां कृषि, डेटा एनालिसिस, शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकीध्समाधान और विनिर्माण क्षेत्र की थीं। उनमें से एक चौथाई का सालाना कारोबार दस लाख रुपये तक था। पांच में एक से भी कम स्टार्टअप का सालाना टर्नओवर एक करोड़ से ऊपर है। इनमें 43 फीसदी ने अपनी निजी पूंजी से या परिवार और दोस्तों से मदद लेकर कारोबार शुरू किया।

इंटरनैशनल फंडिंग केवल 13 प्रतिशत को हासिल है जबकि अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक ऋण 1.7 फीसद को ही मिल सका है। भारतीय स्टार्टअप क्षेत्र का उतार–चढ़ाव देखना हो तो शुरू में इसने तेज रफ्तार पकड़ी, फिर अचानक कई कंपनियां बंद हुईं जिससे लगा कि नए कारोबारियों के लिए देश में कोई गुंजाइश ही नहीं है। इधर एक बार फिर इस क्षेत्र में सुगबुगाहट आई है। पारंपरिक उद्यमियों ने संघर्ष के दिनों को झेलने के लिए कई व्यवस्थाएं बना रखी हैं पर नए उद्यमी अक्सर छोटी चुनौतियों का सामना होते ही लड़खड़ाने लगते हैं। दरअसल नए उद्यमियों को कई तरह की बारीकियां समझनी पड़ती हैं और एक जटिल सिस्टम से निपटना सीखना होता है। इसके अलावा उन्हें धंधे में पहले से जमे लोगों के साथ होड़ में भी उतरना पड़ता है।

ऐसे में उन्हें सरकार से भरपूर सहयोग मिलना जरूरी है। मोदी सरकार ने बड़े जोर–शोर से स्टार्टअप इंडिया शुरू किया लेकिन इसका जितना लाभ उन्हें मिलना चाहिए था, वह मिल नहीं पा रहा। कुछ समय पहले लोकल सर्कल्स नाम की संस्था के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि स्टार्टअप इंडिया का लाभ सिर्फ 18 प्रतिशत स्टार्टअप्स को मिल रहा है। इसके अनुसार नौकरशाही के टालू रवैये और भ्रष्टाचार से नए उद्यमी परेशान हैं। 45 प्रतिशत स्टार्टअप्स का मानना है कि भ्रष्टाचार और सरकारी अक्षमता उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती है। सर्वे के मुताबिक एंजेल टैक्स का मामला स्टार्टअप के लिए नुकसान पहुंचाने वाला रहा है। उनका सारा ध्यान और समय इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की नोटिसों का जवाब देने में जा रहा है और वे अपने प्रॉडक्ट या सर्विस पर फोकस ही नहीं कर पा रहे। सरकार को उनके लिए कुछ ऐसी ठोस व्यवस्था बनानी चाहिए कि वे खराब दौर भी झेल ले जाएं।

एहसास करना

योगाचार्य सुरक्षित गोस्वामी।

धर्म-दर्शन

इस बात का एहसास करना कि गलतियां सभी करते हैं, हमारे आगे बढ़ने के लिए जरूरी है। हमारा आगे बढ़ना स्वच्छंद होना चाहिए। हमें परफेक्ट बनने की चाह को त्यागने और जीवन को विचारशील तरीके से देखने की आवश्यकता है। हो सकता है कि ऐसा करने पर हमारे जीवन का बहाव पहाड़ की उस जलधारा के जैसा हो जाये जो पत्तों से भरे जंगलों से गुजरती है और संघर्ष करती हुई अपनी गरिमा के साथ बहती रहती है। हम अंततरू अपने सच्चे स्वरूप और स्वभाव को देख शांति पा सकते हैं। व्यक्तिगत ज्ञान और आत्मज्ञान के उच्च स्तर को पाने का शानदार तरीका यह है कि आप अपने जर्नल के पन्ने के बाईं तरफ अपने जीवन में की गई दस बड़ी गलतियों के बारे में लिखें।

संपादकीय

एंटी सैटेलाइट मिसाइल

भारत ने अंतरिक्ष में सुरक्षा के लिए एंटी सैटेलाइट मिसाइल तकनीक पहले ही विकसित कर ली थी, अब उसका परीक्षण भी कर लिया है। इस क्रम में आधिकारिक रूप से यह तकनीक हासिल करने वाला वह विश्व का चौथा देश बन गया है। अभी तक ऐसी मिसाइल के सफल परीक्षण केवल अमेरिका, रूस और चीन ने किए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में यह अहम जानकारी दी थी कि हमारे वैज्ञानिकों ने लो–अर्थ ऑर्बिट में 300 किलोमीटर दूर एक लाइव सैटेलाइट को मार गिराया। 'मिशन शक्ति' नाम का यह ऑपरेशन भारत की एंटी सैटैलाइट मिसाइल ए–सैट के जरिए सिर्फ तीन मिनट में पूरा किया गया।

इस तरह भारत अब जल, जमीन और आकाश के अलावा अंतरिक्ष में भी किसी शत्रुतापूर्ण गतिविधि का कड़ा जवाब दे सकता है। अगर कोई दुश्मन देश अंतरिक्ष में सैटेलाइट के जरिए भारत पर नजर रख रहा हो या जासूसी कर रहा हो, तो जरूरी होने पर भारत उस सैटेलाइट को नेस्तनाबूद कर सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि यह मिशन पूरी तरह स्वदेशी है और इसरो तथा डीआरडीओ ने इसे मिलकर अंजाम दिया है। पिछले चार दशकों में भारत ने मिसाइल और उपग्रह निर्माण दोनों ही क्षेत्रों में तेज प्रगति की है। कृषि, आपदा प्रबंधन, मौसम की जानकारी, मनोरंजन और शिक्षा में हमारे सैटेलाइटों का अहम योगदान है। दूसरी तरफ रक्षा क्षेत्र में भी इनका उपयोग हो रहा है। यह सही है कि अंतरिक्ष में अभी तक कोई लड़ाई नहीं हुई है लेकिन रक्षा विशेषज्ञ उसे भविष्य के युद्धस्थल के रूप में देखते हैं। उनमें कुछेक का यहां तक मानना है कि अगला विश्व युद्ध स्पेस में लड़ा जाएगा। अमेरिका में बाकायदा स्पेस फोर्स बनाने की तैयारी चल रही है जो अमेरिकी सैन्य बलों की छठी शाखा होगी।

रिपोर्ट में पिछले साल केरल में आई असाधारण वर्षा बाढ़ का भी जिक्र मौजूद है। गुतेरेस ने इस बात पर चिंता प्रकट की कि जलवायु परिवर्तन उसे कम करने के हमारे प्रयासों के मुकाबले काफी तेजी से बढ़ रहा है।

विश्व के लिए चेतावनी

नवीन शर्मा।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) द्वारा जारी रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ द ग्लोबल क्लाइमेट' पूरे विश्व के लिए चेतावनी है। यह बताती है कि सरकारों द्वारा पर्यावरण को लेकर समुचित कदम न उठाए जाने के कारण पेरिस संधि का लक्ष्य निर्धारित समय पर क्या, देर से भी पूरा होना कठिन है। हालात सुधरने के बजाय दिनोंदिन और बिगड़ते ही जा रहे हैं। यह रिपोर्ट न्यूयॉर्क में चल रहे पर्यावरण संबंधी उच्च स्तरीय बैठक के मौके पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतेरेस ने जारी की।

रिपोर्ट के मुताबिक कार्बन उत्सर्जन में कमी नहीं आ पा रही है इसलिए पिछले चार वर्षों में धरती के तापमान में लगातार बढ़ोतरी हुई है। 2018 में पूर्व–औद्योगिक समय की तुलना में तापमान एक डिग्री सेल्सियस ऊपर चला गया, जबकि पेरिस संधि में इस वृद्धि को सदी बीतने तक 2 डिग्री सेल्सियस तक ही सीमित रखने का लक्ष्य है। अगर तापमान इसी तरह बढ़ा तो यह यह लक्ष्य शायद ही हासिल किया जा सके। कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर 1994 में 357 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) था, जो 2017 में 405.5 पीपीएम हो गया। ग्रीनहाउस गैसों के

बढ़ते उत्सर्जन के कारण समुद्र तल लगातार ऊंचा हो रहा है। 2017 की तुलना में इसमें 2018 में 3.7 मिलीमीटर की वृद्धि हुई। इसके अलावा समुद्री जल में अम्लीयता बढ़ रही है जिससे मूंगों की मौत हो रही है।

जल–जीवों की विविधता पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। ग्लेशियरों का आकार छोटा हो रहा है। मौसम का मिजाज बदल गया है। कभी उत्तरी यूरोप में प्रलयंकारी बारिश आ जाती है तो कभी शिकागो उत्तरी ध्रुव से भी ठंडा हो जाता है। रिपोर्ट में पिछले साल केरल में आई असाधारण वर्षा बाढ़ का भी जिक्र मौजूद है। गुतेरेस ने इस बात पर चिंता प्रकट की कि जलवायु परिवर्तन उसे कम करने के हमारे प्रयासों के मुकाबले काफी तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने इस समस्या से निपटने के लिए कदम उठाने का आह्वान करते हुए विश्व भर के राजनीतिक नेतृत्व से ठोस और यथार्थवादी योजनाओं के साथ आगे आने के लिए कहा है।

जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया की समस्या है और इससे मिलकर ही लड़ा जा सकता है लेकिन विडंबना यह है कि कई ताकतवर देश इसे लेकर गंभीर नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप तो ग्लोबल वार्मिंग को कोई समस्या ही नहीं मानते, लिहाजा उन्होंने अमेरिका को इस संधि से बाहर कर दिया है। सचाई यह है कि ग्लोबल वार्मिंग पर हर कोई दूसरे से कदम उठाने की अपेक्षा करता है लेकिन खुद कुछ नहीं करना चाहता।

भारत ने पेरिस संधि में अहम भूमिका निभाई है लेकिन काफी कार्बन उत्सर्जित करने वाले देशों में भारत की भी गिनती होती है। हमें वैकल्पिक ऊर्जा के विकास के लिए लगातार प्रयास करना होगा। खासकर सौर ऊर्जा के मामले में भारत का रिकॉर्ड काफी अच्छा है। लेकिन प्रदूषण अब भी हमारे अजेंडे में बहुत नीचे है। इसे विकास योजना का हिस्सा बनाकर तस्वीर बदली जा सकती है।

अष्टयोग- 4921

5	3	2		1	6	
	27		24		33	
	5	3		7	1	
1	30	6	37	3	34	5
7	1				2	4
	38		40		26	
	7	4		5	2	1

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4920 का हल

2	3	5	4	1	6	7
1	30	6	34	2	31	3
5	1	7	3	6	2	4
6	30	1	33	3	34	5
3	5	2	4	7	1	6
7	35	4	35	4	28	2
4	7	3	6	5	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

नागालैंड की राजधानी कश्मीर

जय प्रकाश। हमारा राजस्थान शिक्षा के मामले में स्वतंत्रता से पूर्व इतना विकसित नहीं था। ठाकुरों और नवाबों को तो केवल 'बाप जी घणी खम्मा' से अधिक शिक्षित जनता चाहिए ही नहीं थी जिसका प्रबंध वे अपने लट्ठ के बल पर किए हुए थे। हां, सेठों ने गांधी जी के प्रभाव के कारण शिक्षा के प्रचार में पर्याप्त रुचि ली। अपने इलाकों में स्कूल खोले जिनमें अध्यापक उत्तर प्रदेश के मेरठ, आगरा से आते थे। इसलिए हम उत्तर प्रदेश को बहुत शिक्षित मानते आए हैं। लगता है वहां का तो गधा भी संस्कृत बोलता होगा। हम यह भी मानते रहे कि उत्तर प्रदेश के पास दुनिया के सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। लेकिन आज ऊपर संदर्भित गुरुजी द्वारा दिए गए उत्तरों से हमें बहुत सदमा लगा।

जैसे ही तोताराम आया हमने उसी पर सारी झुंझलाहट उतार दी। कहा– देखा, क्या हाल हो गया है उत्तर प्रदेश का? बोला– क्यों क्या हुआ? सब कुछ ठीक तो है। राम मंदिर का फैसला आ गया और अब एक भव्य मंदिर बनेगा। दुनिया की सबसे ऊंची राम की मूर्ति बनेगी। दिवाली पर लाखों दीये जलाए गए ही थे। गायों को सर्दी से बचाने के लिए कोट पहनाए जा रहे हैं। और क्या चाहिए?